Q Critically examine Cash-balance approach of quantity theory of money.

मुद्रा के परिणाम सिद्धान्त से दो संबंधित विचारधाराएँ है पहली विचारधारा को Transaction approach कहा जाता है। इसे Fisher ने प्रतिपादित किया। दूसरी विचारधारा को Cash-balance approach कहा जाता है। इस विचारधारा को Cambridge अर्थशास्त्रियों ने दिया है- जिनमें Marshall, Pigou, Robertson तथा Keynes के नाम आते है।

According to cash balance theory the value of money at any time is fixed at that level at which its supply is equated to demand and the variation in its value through time arises, out of the changes either in supply or its demand or both, Thus; the Cambridge Version of the quantity theory confirms to the proportions of the general value theory.

इसप्रकार Cash balance approach के अनुसार किसी भी अर्थव्यवस्था में मुद्रा का मूल्य उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जहां मुद्रा की मांग तथा पूर्ति एक दूसरे के बराबर हो जाती है। मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन का कारण मुद्रा की मांग में परिवर्तन हो सकता है यदि मुद्रा की पूर्ति स्थिर है, या मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन मुद्रा की पूर्ति में परिवर्तन के कारण हो सकती है यदि मुद्रा की मांग स्थिर है अथवा मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन का कारण मुद्रा की मांग तथा पूर्ति दोनों में परिवर्तन हो सकता है।

किसी भी क्षेत्र में किसी खास समय में सभी व्यक्तियों द्वारा की गई मुद्रा की मांग को

Scanned with CamScanner

Cash balance कहा जाता है दूसरे शब्दों में लोग क्रयशक्ति को मुद्रा के रूप में अपने पास रखना चाहते है उसे ही Cash balance कहा जाता है। अगर यह क्रयशक्ति साल में एक महीने के लिए रखा जाय तो Cash balance अर्थात $K = \frac{1}{12}$ होगा। अगर समाज में दो महीने के लिए Idle cash balance रखा जाता है तो $K = \frac{1}{6}$ होगा। मार्शल मुद्रा की माँग को स्पष्ट करने में K का बहुत ही महत्व दिया है। अर्थव्यवस्था में अगर साख तथा वित्तीय संस्थाएँ बहुत ही विकसित है तथा जनता को नियमित रूप से आय प्राप्त होती है तो K की मात्रा कम होगी। अगर अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति स्थिर है तो K के कम होने के कारण मुद्रा का मुल्य घट जाता है तथा वस्तुओं का मुल्य बढ़ जाता है।

मुद्रा की पूर्ति के अंतर्गत cash की पूरी मात्रा तथा checking deposits की पूरी मात्रा आती है। मुद्रा की पूर्ति मौद्रिक आधार पर निर्भर करती है यह इस बात पर भी निर्भर करती है कि लोग कितनी मात्रा में Cash तथा checking deposits रखना चाहते है। मुद्रा की पूर्ति Ratio between Bank Reserve And checking Deposits कितनी है, इससे भी प्रभावित होती है। Cambridge अर्थशास्त्रियों ने निम्नलिखित समीकरण दिये है।

$$M = KY \quad \text{--- (i)}$$

जहाँ $Y = PO$ (Marshall)

$$\therefore M = KPO$$

$$\therefore P = \frac{M}{KO} \quad \text{or} \quad P = \frac{1}{K} \cdot \frac{M}{O}$$

$$M = \frac{KR}{P} \quad \text{--- (ii)}$$

(Pigou)

$$\text{or } P = \frac{KR}{M}$$

$M = PKT$ (iii) (Robertson)

$\therefore P = \frac{M}{KT}$ or $P = \frac{1}{K} \cdot \frac{M}{T}$

$\frac{n}{p} = p(K + rK')$ (iv) (Keynes)

$= \frac{n}{K + rK'}$

उपर के समीकरण में $M = n$ = मुद्रा की मात्रा
तथा K = Idle cash balance
P = Price level किन्तु Pigou के समीकरण में P = Value of money एवं Keynes के समीकरण में P = उपभोग वस्तु का मूल्य Keynes के सूत्र में 'K' Bank deposit के रूप में रखे गये Idle cash balance को बतलाता है।

उपर के सूत्रों पर विचार करने से एक महत्वपूर्ण बात का पता चलता है कि सभी Cambridge economists के सूत्र में K को स्थान मिला। इन अर्थशास्त्रियों का कहना है कि मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन में मुद्रा की पूर्ति की अपेक्षा मुद्रा की मांग अर्थात K का महत्वपूर्ण स्थान रहता है।

साधारणतः वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन का कारण M या K में परिवर्तन हो सकता है तथा मुद्रा की मांग में परिवर्तन T तथा K में परिवर्तन के कारण होता है। किन्तु Cambridge economists के अनुसार वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन मुद्रा की मांग में परिवर्तन के कारण होता है और मुद्रा की मांग मे परिवर्तन का कारण Cash balance में परिवर्तन होना है। Cash balance सिद्धान्त के अनुसार जब मुद्रा की मांग में वृद्धि होती है और मुद्रा की पूर्ति स्थिर रहती है तो मूल्य में परिवर्तन मुद्रा की मांग में परिवर्तन के कारण होती है।

Scanned with CamScanner

Cambridge अर्थशास्त्रियों के विचारानुसार "A sudden and rapid shift in the desire of people to hold money (K) may profoundly affect prices even though the money supply is kept constant. A shift in the public psychology or in the expectations, must be taken account of no less than changes in the money supply. It is K, rather than M which is more significant."

Cash balance approach के अन्तर्गत K को बहुत ही महत्वपूर्ण माना गया है Hanson ने मार्शल के K को आय का function माना है तथा सूत्र एवं चित्र से प्रदर्शित किया है

$$K = K(Y) \quad \text{———} \quad (i)$$

Y = Income

K = Cash balance

K is a function of income.

आय में परिवर्तन से K में परिवर्तन हो जाता है इसे एक चित्र से स्पष्ट किया जा सकता है -

ऊपर के चित्र में L रेखा Cash balance

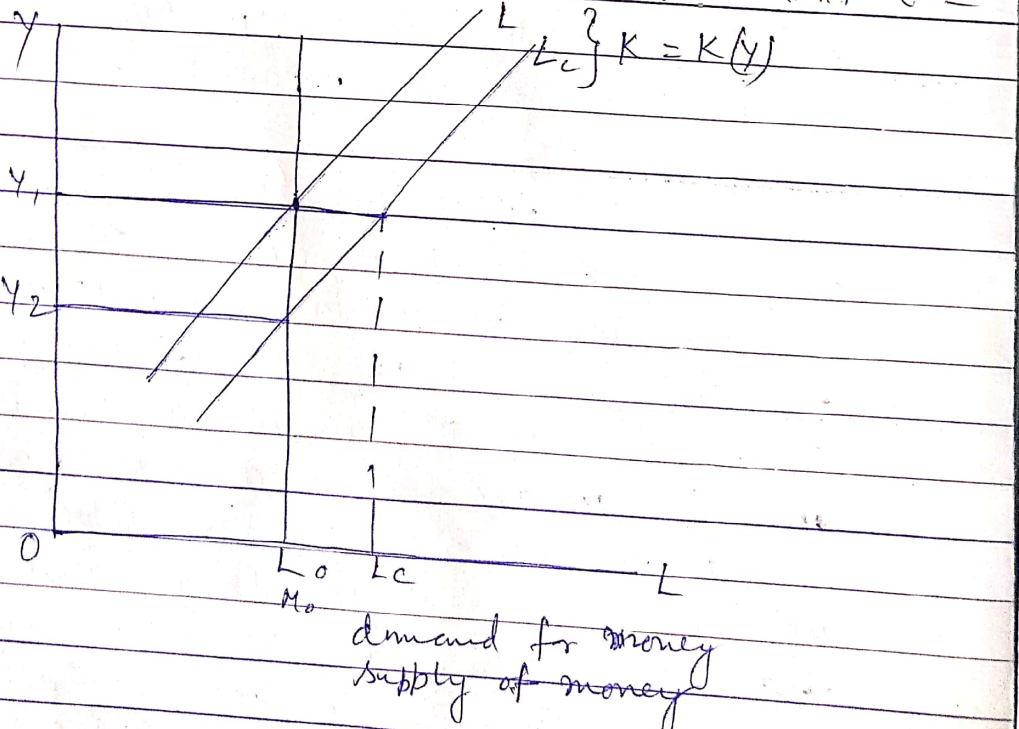

(K) को बतलाती है। मुद्रा की मांग तथा पूर्ति एक दूसरे के बराबर Y_1 आय के स्तर पर होती है।

$OL_0 = OM_0$ at $-Y_1$ (मुद्रा की पूर्ति स्थिर है)

जब L में अर्थात K में वृद्धि होती है जिसका अर्थ होता है कि लोग वस्तु से ज्यादा मुद्रा को पसंद करते हैं जिसके फलस्वरूप K में वृद्धि होती है तथा वस्तु का मूल्य घटता है उत्पादन घटता है जिसके फलस्वरूप आय घटकर Y_1 से Y_2 के स्तर पर आ जाती है और मुद्रा की मांग तथा पूर्ति एक दूसरे के बराबर हो जाती है। इसप्रकार K में परिवर्तन आय में परिवर्तन के कारण होता है इसलिए मार्शल ने $M = KY$ सूत्र दिया है। K में परिवर्तन से मूल्य में परिवर्तन होता है। इसप्रकार वस्तुओं के मूल्य में परिवर्तन का कारण K है न कि M (मुद्रा की पूर्ति)

Pigou ने cash balance approach का एक नया सूत्र दिया जिसमें मुद्रा के मूल्य तथा मुद्रा की मांग के बीच संबंध स्थापित किया है इनके सूत्र के अनुसार मुद्रा के मूल्य तथा K के बीच सीधा संबंध है। K के बढ़ने पर मुद्रा का मूल्य बढ़ता है तथा K के घटने पर मुद्रा का मूल्य घटता है। पीगू के अनुसार जब K तथा R को स्थिर मान लिया जाता है तो उनका सूत्र Ractangular Hyperbola Curve को जन्म देता है जिस रेखा के हर बिन्दुओं पर मुद्रा के मांग की लोच ईकाई के बराबर होती है। ~~और~~ इसलिए

Pigou के अनुसार K तथा R के स्थिर रहने पर Ractangular hyperbola का निम्नलिखित अर्थ निकलता है। "Any increase in the quantity of money will lead to universally perportionate changes in the Value of money. इसप्रकार पीगू के सूत्र से मुद्रा के मूल्य तथा मुद्रा की पूर्ति के बीच संबंध स्थापित हो जाता है जो

मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन का कारण है कि मुद्रा को लोग विभिन्न प्रयोजनों में लाते हैं। कभी तो लोग अपनी सारी मुद्रा को व्यय करके वस्तुओं को खरीदते हैं तथा दूसरी ओर लोग अधिक से अधिक मुद्रा निष्क्रिय रखना चाहते हैं। इसतरह की आर्थिक क्रियाएँ व्यापार चक्र के अवधि में पायी जाती है।

② Comparision or Similarities

Fisher मुद्रा के परिणाम सिद्धान्त तथा Cambridge अर्थशास्त्रियों के द्वारा दी गई मुद्रा परिणाम सिद्धान्त में निम्नलिखित समानता पाई जाती है —

प्रथमतः फिशर तथा कैंब्रिज अर्थशास्त्री दोनों के अनुसार वस्तुओं का मूल्य या मुद्रा का मूल्य मुद्रा की मात्रा पर निर्भर करती है।

द्वितीयतः K का V दोनों में विपरीत संबंध होता है और दोनों एक दूसरे के Reciprocal होते हैं अर्थात $K = \frac{1}{V}$ तथा $V = \frac{1}{K}$ कैंब्रिज अर्थशास्त्रियों के अनुसार।

$$M = PKT$$

और K की जगह $\frac{1}{V}$ सूत्र में डालने पर

$$M = P\frac{1}{V}T$$

$MV = PT$ प्राप्त होता है यह Fisher का सूत्र है। इसप्रकार कैंब्रिज ~~अर्थशास्त्रियों~~ अर्थशास्त्री मुद्रा की निष्क्रिय मांग (K) के माध्यम से मुद्रा को Stock Concept मानता है। इसप्रकार दोनों विचारधाराओं के अनुसार मुद्रा का महत्वपूर्ण कार्य Medium of exchange होता है जिससे मुद्रा की पूर्ति का मूल्य स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव को जाना जाता है।

उपर दिये गये तथ्यों से स्पष्ट होता है कि मुद्रा के परिणाम सिद्धान्त के दोनों विचारधाराओं में काफी समानता है किंतु अधिकांश अर्थशास्त्रियों ने इन दोनों

Scanned with CamScanner

विचारधाराओं में मूलभूत अंतर माना है —

③ Dissimilarities or Contrast or Superiority

प्रथमतः फिशर का सूत्र Mechanistic है जबकि कैंब्रिज अर्थशास्त्रियों द्वारा दिये गये सूत्र Realistic है क्योंकि इसमें Human factor को महत्व दिया गया है। K मनुष्य के मुद्रा रखने की प्रवृत्ति को बतलाती है। अगर K का विस्तार पूर्वक अध्ययन किया जाये तो इससे मूल्य स्तर पर पड़ने वाले अनेक तत्वों के प्रभाव जैसे Motives, uncertainty, ब्याज दर इत्यादि का भी अध्ययन किया जा सकता है जो कि लेन देन संबंधी विचारधारा में संभव नही है। इसलिए कैंब्रिज विचार फिशर के विचारधारा से श्रेष्ठ है।

द्वितीयतः फिशर के सूत्र $P = \frac{MV}{T}$ में यह पता लगाना मुश्किल है कि समाज में व्यक्ति किन किन वस्तुओं पर कुल कितना व्यय किये है जबकि कैंब्रिज सूत्र $P = \frac{M}{KT}$ के अन्तर्गत तुलनात्मक रूप में यह पता लगाना आसान है कि समाज में लोगों ने मुद्रा की कितनी मात्रा को निष्क्रिय रूप में रखे हुए है।

तृतीयतः कैंब्रीज अर्थशास्त्रियों की विचारधारा मुद्रा के मूल्य के निर्धारण में मुद्रा की मांग तथा पूर्ति दोनों को महत्व देकर इस नियम को General theory of value से जोड़ दिया है। इसलिए फिशर की विचारधारा से कैंब्रिज विचारधारा श्रेष्ठ है।

चतुर्थतः फिशर के सूत्र की तुलना में कैंब्रिज अर्थशास्त्रियों का सूत्र इस दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है कि एक ओर फिशर के सूत्र से व्यापार के कारणों की कोई जानकारी नही मिलती तथा दूसरी ओर कैंब्रिज अर्थशास्त्रियों के सूत्र से व्यापार चक्र के कारणों का पता चलता है। मंदी काल में K में अत्यधिक वृद्धि हो जाती है जबकि तेजी (Boom)

Scanned with CamScanner

के सम्बन्ध K में अनावश्यक कमी हो जाती है।

पंचमत: Cash balance model मुद्रा के Stock concept की धारणा पर आधारित है। जबकि Fisher के लेन देन संबंधी सिद्धांत मुद्रा के Flow concept पर आधारित है।

षष्टमत: फिशर का लेन देन संबंधी सिद्धान्त Medium of exchange को ही मुद्रा का महत्वपूर्ण कार्य माना है जबकि Cambridge economists Store of value को मुद्रा का महत्वपूर्ण कार्य माना है।

सप्तमत: Hanson के अनुसार K तथा V में समानता मानना गलत होगा। इनके अनुसार ऐसा कहना Marshall के सूत्र के K के महत्व को ठीक से नहीं समझने के बराबर होगा। K में परिवर्तन से ही मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन होता है इसलिए M से ज्यादा महत्वपूर्ण K है।

Cash balance संबंधी विचारधारा फिशर के विचारधारा से उत्तम होने के बावजूद भी आलोचित किया जाता है जो कि निम्नलिखित है।

प्रथमत: Cash balance approach K का निर्धारण में वास्तविक आय को बहुत अधिक महत्व दिया है जबकि Monetary Habits Business Integration, Price level इत्यादि के द्वारा भी K प्रभावित होती है।

द्वितीयत: Cash balance approach मुद्रा की मांग में Implicit रूप में लेन संबंधी तथा सावधानी बरतने वाली मुद्रा की मांग को सम्मिलित किया है और सट्टेबाजी के लिए की गई मुद्रा की मांग की उपेक्षा की गई है जबकि सट्टेबाजी के लिए की गई मुद्रा की मांग में परिवर्तन का मुद्रा के मूल्य में परिवर्तन का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

तृतीयत: Cash balance सूत्र

Scanned with CamScanner